Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

स्वराज आन्दोलन में संस्कृत भाषा का अवदान

डा0 शालिनी साहनी
संस्कृत विभाग
आर0एम0पी0पी0जी0 कालेज, सीतापुर

शोध सारांष

Article Info
Volume 5, Issue 2

Page Number : 60-68

Publication Issue :
March-April-2022

Article History
Received : 01 March 2022
Published : 17 March 2022

स्वतंत्रता सग्रांम में अनेक संस्कृतज्ञों ने आत्माहुति दी तथा अपनी लेखनी से इस संग्राम को गति प्रदान की। "वयं राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिताः" अभ्युन्नति का मूलमंत्र भारतीयों के रक्त में ही महती भावना को जगाने का कार्य संस्कृत के साहित्य ने उस काल में भी किया है।

स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत की सराहनीय भूमिका रही है। संस्कृत की अनेक पत्र–पत्रिकाओं , नाटकों, कृतियो एवं देषभक्ति गीतों ने स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलनों को समय–समय पर ऊर्जा से भरकर जनमानस को स्वराज्य प्राप्ति की ओर अग्रसर करने में महती भूमिका निभायी है। संस्कृत कवियों, नाट्ककारों एवं संस्कृत पत्र– पत्रिकाओं के सम्पादकों ने पराधीन भारत माता को मुक्त कराने हेतु जन–जन को जागृति दी, राष्ट्रभक्ति एवं विद्रोह करने हेतु उन्हें प्रेरित किया।

भारत में शासन करने के लिए अंग्रेजो ने संस्कृत भाषा और उसके साहित्य को नष्ट करने का षडयंत्र किया। लार्ड मैकाले नें अंग्रेजो को भारत की सरकारी भाषा तथा षिक्षा का माध्यम बनाया, संस्कृत की पारम्परिक षिक्षा को अवैध घोषित किया, जिससे पूरे देष में संस्कृत के गुरूकुल बंद होने लगे संस्कृत के विद्वान बहुत आहत हुए ।

अरविन्द भारतीयों को सनातन बताते हैं वे भारत माता के पुत्र है उन्हें न तो विपरीत विधि मार सकता है, न काल या यमराज ही उनका कुछ बिगाड़ सकते है। भारत माता अपनी भारतीय सन्तति के बल, पराक्रम और पौरूष की प्रषंसा करती हुई भारतीयो को देष की रक्षा के लिये जगाती है प्रेरित करती है तथा उन्हें अग्नि के समान धधक उठने के लिये ललकारती है।

'भवानी भारती' ने भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम हेतु तैयार करने में महती भूमिका निभाई । इसे स्वतंत्रता संग्राम की गीता कहना सर्वाधिक उपयुक्त होगा। गीता ने जिस प्रकार अर्जुन को युद्ध के लिये सन्नद्ध किया उसी प्रकार 'भवानी भारती' ने भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम के लिये तैयार किया।

परतन्त्रता की कष्टकारी बेड़ियों में जकड़े हुए भारतीय जनमानस को स्वतंत्र कराने के लिए संस्कृत कवियों ने दृष्य श्रव्य अनेकानेक काव्यों के माध्यम से भारतीय जनचेतना को नवीन गति प्रदान की । भारत माता को स्वतंत्र कराने हेतु एक नवजागरण का कार्य संस्कृत कृतियों ने किया। काव्य गीतों, नाटको के माध्यम से विपुल साहित्यराषि की रचना हुई । जिसका प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से भारतीय जनचेतना

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

पर व्यापक प्रभाव रहा है और आज भी इस प्रकार का ऐतिहासिक किंवा काल्पनिक लेखन हो रहा है जिसमें तत्कालिन घटना क्रम का वर्णन किया जा रहा है । जिससे आज का स्वातन्त्रयोत्तर भारत भी उस समय के भगत सिंह, आजाद, लक्ष्मीबाई गाँधी वीरसावरकर आदि स्वातन्त्रय वीरों के योगदान से परिचित हों।

Keyswords - 'वन्देमातरम्', कार्यम् वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्, असहयोग आन्दोलन, क्रान्तिकारी, आत्माहुति, "वयं राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिताः"
अभ्युन्नति, "जननी जन्मभूमिष्च स्वर्गादपि गरीयसी"

स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत की सराहनीय भूमिका रही है। संस्कृत की अनेक पत्र–पत्रिकाओं , नाटकों, कृतियो एवं देषभक्ति गीतों ने स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलनों को समय–समय पर ऊर्जा से भरकर जनमानस को स्वराज्य प्राप्ति की ओर अग्रसर करने में महती भूमिका निभायी है। संस्कृत कवियों, नाट्ककारों एवं संस्कृत पत्र– पत्रिकाओं के सम्पादकों ने पराधीन भारत माता को मुक्त कराने हेतु जन–जन को जागृति दी, राष्ट्रभक्ति एवं विद्रोह करने हेतु उन्हें प्रेरित किया।

वैदिक ऋषियों ने पृथ्वी को मातृभूमि की संज्ञा प्रदान की है और **"जननी जन्मभूमिष्च स्वर्गादपि गरीयसी"** की भावना का प्रसार किया है। "माताभूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः" की महती भावना श्रुति परम्परा द्वारा ही भारतीयों में समाहित रही है।

"वयं राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिताः" अभ्युन्नति का मूलमंत्र भारतीयों के रक्त में ही महती भावना को जगाने का कार्य संस्कृत के साहित्य ने उस काल में भी किया है।

स्वतंत्रता सग्रांम में अनेक संस्कृतज्ञों ने आत्माहुति दी तथा अपनी लेखनी से इस संग्राम को गति प्रदान की। ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना भी मुम्बई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में की । प्राचीन ज्ञान–विज्ञान की आदि भाषा संस्कृत आधुनिक समय की भी इतिहास एवं तथ्यपरक भाषा है। स्वराज आन्दोलन में अद्भुत भूमिका निभाने वाले महावीर क्रान्तिकारी चन्द्रषेखर आजाद की विजयगाथा संस्कृत साहित्य में बहुषः गायी गयी है उनकी अमर गाथा को गाते हुए संस्कृत कवियों ने विपुल लेखन किया है और अद्यतन हो रहा है।

संस्कृत के विद्यार्थी आजाद ने 15 वर्ष की स्वल्प आयु में ही अंग्रेंजो के विरूद्ध क्रान्ति की रणभेरी बजा दी थी। आजाद ने 1921 मे **असहयोगी संस्कृत छात्र समिति** के माध्यम से बहिष्कार आन्दोलन का नेतृत्व किया और अंग्रेंजो द्वारा गिरफ्तार किये गये। चन्द्रषेखर आदिवासियों और भीलों के बच्चों के साथ पले–बढे, उन्हीं के साथ धनुष–बाण चलाना सीखा। अपनी माता के आग्रह पर वे संस्कृत षिक्षा के लिये काषी गये और काषिक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय में अध्ययन करने लगे। गॉधी जी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर मन्मथनाथ गुप्त द्वारा प्रणवेष चटर्जी के सम्पर्क में आये और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। जलियांवाला बाग काण्ड से उद्विग्न होकर उन्होंने छात्रों के साथ मिलकर आन्दोलन किया और पहली बार पकड़े गये ।

मदनलाल वर्मा ने उनपर "आजादचन्द्रषेखरो वीरवरः" नामक नाटक की रचना की। स्वामी राम भट्टाचार्य ने खण्डकाव्य विधा में "आजाद चन्द्रषेखर चरितम्" लिखकर आजाद का गुणगान किया, अयोध्या निवासी देवी सहाय पाण्डेय "दीप" ने चन्द्रषेखर आजाद के गुणों पर ग्यारह खण्डों में सम्पूर्ण महाकव्य लिखा ।

संस्कृत में आजाद का यषोगान करने वाले अनेक कवि है। इन समस्त कवियों ने भारतीय स्वराज आन्दोलन को उपजीव्य बनाकर चन्द्रषेखर आजाद के चरित्र की पराकाष्ठा वर्णित की है। वह राष्ट्र के अनन्य उपासक एवं भारत माता के सच्चे पुत्र के रूप में इन काव्यों में वर्णित हैं। वे एक धर्मवीर, दयावार एवं युद्धवीर के रूप में अंकित हैं इन काव्यों में। उनके जीवन का लक्ष्य राष्ट्र को अंग्रेजों से मुक्त कराना ही था।

स्वामी राम भट्टाचार्य आजाद की वीरता को अपनी कविता का स्वर देते है ; आजाद का स्वर उनकी कविता का स्वर बनकर संस्कृत की स्वरलहरियों में गूँजता हुआ युवाओं में राष्ट्रभक्ति का जोष भर देता है। आजाद की पहली गिरफ्तारी के बाद न्यायाधीष के सम्मुख उपस्थित आजाद से न्यायाधीष पूछता है–

क्व ते गृहं का च तवाऽस्ति माता, कस्ते पिता, किं च तवाऽभिधानम् ।
के ते सहायाः ; व्यसनं च किन्ते क्रान्तौ किमिच्छन् समभूः प्रवत्तः।।[1]

अर्थात् तुम्हारा घर कहाँ है, तुम्हारे माता–पिता का नाम क्या है? तुम्हारे सहायक कौन है ? तुम्हारा व्यसन क्या है? और तुम क्या चाह कर क्रान्ति में प्रवृत्त हुए हो?

कारा मेऽस्ति गृहं च भारतमहीं माता मनोज्ञामम,
श्रीरामोऽस्ति पिता–समदृयजरि पून्नाजादनामास्म्यतः ।[2]

अर्थात कारागार मेरा घर है भारतभूमि ही मेरी सुन्दर माता है श्री राम मेरे पिता हैं मैं अजरूप अंग्रेज शत्रुओं का भक्षण करता हूँ । मेरा नाम आजाद है, अंग्रजों को उखाड़ फेंकने में तत्पर मेरी दोनो भुजायें ही मेरी सहायक है और भारतभूमि को अपनाने के इच्छुक तुम अंग्रेजो को उखाड़ फेंकने के लिए ही मैं क्रान्ति के लिये उतरा हूँ।

आजाद के इस उत्तर से क्षुब्ध न्यायाधीष ने उसे पन्द्रह बेंत मारने की सजा सुनायी । निर्दय सिपाही उस कोमल बालक पर कोड़े बरसाने लगा। उस दृष्य की कल्पना मात्र से संस्कृत का कवि रो पड़ता है –

अहो दुरन्तां च परिस्थितिं तां स्मृत्वा विदीर्णावसुधाकथं नो ।
निर्दोषबालं च यदा प्रहर्तुं प्रसह्य पापा निगडैर्बबिन्धुः।[3]

काकोरी काण्ड आदि घटनाओं से आजाद ने अंग्रेजों की नींद उदा दी। भगत सिंह राजगुरू के साथ मिल का लाहौर में साण्डर्स का बध करके उन्होंने लालालाजपत राय की मृत्यु का बदला लिया। आजाद के ही नेतृत्व में केन्द्रीय असेम्बली में बटुकेष्वरदत्त और भगत सिंह ने बम फोडा। पुलिस से चारों ओर से घिर चुके आजाद ने बहुत देर तक भंयकर गोली बारी की फिर आखिरी गोली स्वयं को मार ली किन्तु अंग्रेजी पुलिस के हाथ नही आये । प्रयागराज के चन्द्रषेखर आजाद पार्क में आज भी वह वृक्ष विद्यमान है जिसकी आड़ से अंग्रेजो से लड़ते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुए थे ।

भारत में शासन करने के लिए अंग्रेजो ने संस्कृत भाषा और उसके साहित्य को नष्ट करने का षडयंत्र किया। लार्ड मैकाले नें अंग्रेजो को भारत की सरकारी भाषा तथा षिक्षा का माध्यम बनाया, संस्कृत की पारम्परिक षिक्षा को अवैध घोषित किया, जिससे पूरे देष में संस्कृत के गुरूकुल बंद होने लगे संस्कृत के विद्वान बहुत आहत हुए । संस्कृत विद्वानों की एक सभा कलकत्ता में हुई जिसके निर्णय के अनुसार H H Wilson को एक श्लोक बद्ध पत्र भेजा गया –

अस्मिन संस्कृत पाठ सद्यसरसि त्वत्स्थापिता
ये सुधी हंसाः कालवेषन पक्षरहिता दूर गते ते त्वयि।
तत्तीरे निवसन्ति सम्प्रति पुन व्यार्धास्तदुच्छित्तये
तेभ्यस्त्वं यदि पासि पालक तदा कीर्तिष्चिरं स्थास्यसि।

विल्सन को प्रेमचन्द्र तर्कवागीष आदि अनेक पण्डितों द्वारा संस्कृत की रक्षा हेतु अनेक पत्र भेजे किन्तु उन सबका प्रत्युत्तर विल्सन द्वारा कुछ इस प्रकार दिया गया कि संस्कृत की उपेक्षा और भारतीय जनता की दुर्दषा से संस्कृत विद्वान खिन्न हो गये ।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही अंग्रेज संस्कृत को मृतभाषा कहकर दुष्प्रचार करने लगे । दूसरी ओर संस्कृत के विद्वानों एवं रचनाकारों एवं पत्रकारों ने संस्कृत की प्राणवत्ता और रचनाधर्मिता को अपनी पत्रिकाओं और रचनाओं के माध्यम से प्रमाणित किया? संस्कृत भाषा के अभिव्यक्ति सामर्थ्य को देखकर मोनियर विलियम्स ने लिखा Sanskrit is not a dead language ever today 1882 में बंकिम चन्द्र चटर्जी ने **'वन्देमातरम्'** का नारा दिया। जो स्वतंत्रता आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण नारा बना और आज भी राष्ट्रगीत के रूप में प्रतिष्ठित है।

पं अम्बिकादत्त व्यास ने षिवराज विजय के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को जगाया। भारत की दर्दुषा के चित्रण से उन्होंने जनमानस को आकृष्ट किया –

"क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयघोषाः ? क्वसम्प्रति तीर्थ घण्टानादः क्वाऽद्यापि मठेमठे वेदं घोषः ? अद्यहि वेदा विच्छिद्य वीथिषु विक्षिप्यन्ते " इत्यादि वर्णनों द्वारा उन्होंने भारतीय जनता को अपने राष्ट्र अपनी भाषा एवं संस्कृति के लिये प्राणोत्सर्ग हेतु राष्ट्रभावना को जागृत करने का प्रयास किया।

स्वराज आन्दोलन में संस्कृत की अनेक पत्र–पत्रिकाओं का भी अन्यतम योगदान रहा है। अप्पा शास्त्री राषि बडेकर ने 'संस्कतचन्द्रिका' तथा 'सुनृतवादिनी' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से अंग्रेजो के विरूद्ध आग बरसाना प्रारम्भ किया अंग्रेजों की परवाह किये बिना अपने सम्पादकीयों में वे अंग्रेजो की सत्ता की धज्जियॉ उड़ाने लगे "किमेष भेदः क्व सुखम्" जैसी रचनाओं की प्रकाषित कर उन्होंने आन्दोलन की दृढ भूमि तैयार की ।

लार्ड कर्जन के विरोध में अप्पा शास्त्री ने संस्कृत चन्द्रिका के सितम्बर 1905 के अंक में विस्तृत सम्पादकीय लिखी। बंगभंग का संस्कृत पत्रकारों ने खुला विरोध किया तथा स्वदेषीय आन्दोलन का प्रबल समर्थन किया गया। अप्पाषास्त्री ने **बङ्गीयेषु स्वदेषीयान्दोलनम्** जैसी तीक्ष्ण समीक्षा लिखकर आन्दोलन की तीव्रता का प्रचार किया।

दूसरी ओर बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा लिखा गया 'वन्देमातरम् का उद्घोष सुनकर अंग्रेज उसे 'बॉधो मारो' समझते थे और भयभीत होकर भाग जाते थे हषीकेष भट्टाचार्य जैसे निर्भीक संस्कृत पत्रकारो ने लाहौर से अंग्रेजों के विरोध में प्रबल लेखन किया।

1908 में 'समाचार पत्र' अधिनियम के अन्तर्गत अंग्रेजों ने केसरी जैसे महान समाचार पत्र पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया और बाल गंगाधार तिलक को बन्दीबना लिया। 'सुनृतवादिनी' में इसका प्रबल विरोध प्रकाषित हुआ । अंग्रेजो ने तिलक पर भारी जुर्माना किया तथा उन्हे 6 वर्ष का सश्रम कारावास भी दिया गया सुनृतवादिनी ने इस समाचार को हा धिक कष्टम् !!! दण्डितो महात्मा तिलकः शीर्षक से प्रकाषित किया (संस्कत का समाज शास्त्र पृ 121)

अप्पा शास्त्री राषि वडेकर ने क्लाइव को लुटेरा बताते हुए अंग्रेंजी शासन का प्रखर विरोध किया। उन्होने **पञ्जरबद्ध शुकः** जैसी कविता लिखी और अन्योक्ति के बहाने परतंत्र भारत की वेदना व्यक्त की –

"शुक सुवर्ण मयस्तव पञ्जरो
न खलु पञ्जर एष विभाव्यताम् ।[4]
मुखमिदं ननु हेमश्लाकिका –
रदनषालिमृते रति भीषणम् ।

बालगंगाधर तिलक पर हुए अत्याचारों से अप्पाषास्त्री दुखी थे। उन्होंने तिलक "**महाषयस्य कारागृहनिवासः"** शीर्षक कविता लिखी। उन्होंने लिखा कि दर्बुद्धि लोग हथकड़ी की निन्दा भले ही करते रहें महात्मा तिलक के हाथ में पड़ने से वह आभूषण बन गयी है। –

निगदन्तु निसर्गदुर्धियों निगडं दूषणमित्यमुं तव।
अपर स तथापि भूषणं भवतो येन विषिष्य पूज्यते ।
अपतद् भवत् पदाम्बुजे निजपुण्यस्य विपाकतोऽद्यसः ।
यदपास्य जगत्यवद्यतां निगडः साधुतमत्वमागतः ।।

(संस्कृत का समाजषास्त्र पृ0 – 121)

अंगेंजी हुकूमत की अत्याचार इस सीमा तक बढ़ गयी कि उन्होंने संस्कृत चन्द्रिका, सुनृतवादिनी तथा ज्योतिष्मती जैसी अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध आग उगलने वाली पत्रिकाओं को बन्द करा दिया। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले संस्कृत विद्वानों को प्रताड़ित करने के साथ ही उन्हें बन्दी बना लिया गया। किन्तु **कार्यम् वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्** का सिद्धान्त लेकर संस्कृत विद्वान अंग्रेजो के उत्पीड़न से भयभीत नहीं हए। साथ ही बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय का वन्देमातरम् जैसा महनीय राष्ट्रीय गीत स्वतंत्रता संग्राम को गति देता रहा ।

महर्षि अरविन्द महान साधक और महान योगी थे अंग्रेजो ने उन्हें बडौदा कारागार में बन्द कर दिया था वहाँ उन्होंने स्वप्नाविष्ट अवस्था में भारत माता के विकराल स्वरूप का साक्षात्कार किया और उसे 'भवानी भारती' नामक अपने काव्य में अंकित किया। उस समय भवानीभारती की एक मात्र पाण्डुलिपि को पुलिस ने जब्त कर लिया था और वहाँ अंग्रेजी अनुवाद के साथ जो अब अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी से प्रकाषित है। स्वप्न में स्वामी अरविन्द ने किसी विकराल देवी को देखा। उस देवी ने अपने हाथ से उनका स्पर्ष किया और देखते देखते काली के रूप में परिवर्तित हो गया। महर्षि अरविन्द उस देवी के जिस विकराल रूवरूप को साक्षात्कार करते है यथाहि –

नरास्थिमालां नृकपालकाञ्चीं वृकोदराक्षीं क्षुधितांदरिद्राम् ।
पृष्ठे व्रणाङ्काम सुरप्रतोदैः सिंही नदन्तीमिव हन्तुकामाम्।[5]

इस विकराल देवी को देखकर महर्षि अरविन्द जैसा महातपस्वी भी भयभीत और उद्विग्न हो उठता है । वह उसे प्रणाम करके पूछते हैं –

"का भासि नक्त हृदये करालि । कुवाणिं किं ब्रूहि नमोऽस्तु भीमे ।"

अरविन्द के प्रष्न को सुनकर वह देवी – जंगल में किसी प्राणी के वध के लिये भ्रमण कर रहे सिंह की तरह गर्जना करती हुई बोली –

"माताऽस्मि भोः पुत्रक । भारतानां सनातनानां त्रिदषप्रियाणाम् ।
शक्तो नयान् विधिर्विपक्षः कालोऽपि नो नाषयितु यमो वा।"[6]

अरविन्द भारतीयों को सनातन बताते हैं वे भारत माता के पुत्र है उन्हें न तो विपरीत विधि मार सकता है, न काल या यमराज ही उनका कुछ बिगाड़ सकते है। भारत माता अपनी भारतीय सन्तति के बल, पराक्रम और पौरूष की प्रषंसा करती हुई भारतीयो को देष की रक्षा के लिये जगाती है प्रेरित करती है तथा उन्हें अग्नि के समान धधक उठने के लिये ललकारती है।

उत्तिष्ठ भो जागृहि सर्जयाग्नीन्साक्षाद्धि तेजोऽसि परस्य षौरेः ।
वक्षः स्थितेनैव सनातनेन शत्रुन् हुताषेन दहन्नटस्व । [7]

'भवानी भारती' ने भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम हेतु तैयार करने में महती भूमिका निभाई । इसे स्वतंत्रता संग्राम की गीता कहना सर्वाधिक उपयुक्त होगा। गीता ने जिस प्रकार अर्जुन को युद्ध के लिये सन्नद्ध किया उसी प्रकार 'भवानी भारती' ने भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम के लिये तैयार किया। उनमें ओज भरकर उन्हे स्वतंत्रता के संग्राम में क्रान्ति के लिये उतारा। अरविन्द प्रत्येक भारतवासी को स्वतंत्रता संग्राम के लिये जगाते हैं चाहे वह हिन्दु हों या मुसलमान । उनका धर्म भेद हो सकता है किन्तु देष भेद नही। सब इसी भारत के निवासी हैं –

भो भो अवन्त्या मगधाष्च बंगा , अंगा, कलिंगा कुरवष्चसिन्धोः ।
भो दक्षिणात्याः शृणुतान्ध्र चौला वसन्ति ये पञ्चनदेषु धीराः ।
ये के त्रिमूर्तिं भजतैकमीषं ये चैकमूर्तिं यवना मदीयाः ।
माताह्वये वस्तनयान्हि सर्वान्निद्रां विमुञ्चध्वमयेषृणुध्वम् । [8]

भवानी भारती संस्कृत साहित्य की अमूल्य कृति है। भावबोध तथा कर्तव्य की पराकाष्ठा इस कृति में दृष्टिगत होती है। अरविन्द अंग्रेजों की चाटुकारिता करने वाले भारतीयों की भारतमाता के मुख से कठोर निन्दा करते करते हैं–

" म्लेचछस्य पूतष्चरणामृतने गर्व द्विजोऽसमीति करोति कोऽयम् ।"

उस कालखण्ड का प्रत्येक संस्कृतज्ञ स्वान्त्रय योद्धाओं का सहयेाग कर रहा था ।

पी0आर0 कृष्णामाचार्य ने भारतगीतम् की रचना की। कवि नगरकर ने 'राष्ट्रीय जागृति', आत्मा राम शास्त्री ने 'षिवहृदयम्' ए0के0 तात्याचार्य ने **भारतीया मनोरथः वरकृष्णामाचार्य ने भारतखड्गः** रामावतार शर्मा ने अभिनव भारतम् **'चारूचन्द्र वन्द्योपाध्याय' ने मातृसम्बोधनम् , शालिग्राम शास्त्री ने प्रबोधनम् , मेधाव्रताचार्य ने 'मातः का ते दषा' , विधुषेखर भटटाचार्य ने भारतभूमिः,** वृद्धविहगः, उद्बोधनम् तथा अनेक अन्य कवियो ने स्वतंत्रता संग्राम से सम्बद्ध प्रभूत साहित्य की रचना करके जन जन तक पहुँचाया जो स्वतंत्रता की अग्नि को प्रज्जवलित व उदद्प्ति कर रही थी।

पण्डिता क्षमाराव ने 1931 में श्रीमद्भगवद्गीता की तर्ज पर 18 सर्गो में 'सत्यागृह गीता' का प्रणयन कया। यह गॉधी जी के जीवन चरित को गीता की पद्धति में बॉधने का सार्थक प्रयास है। इसमें अफ्रीका में गॉधी जी द्वारा रंगभेद के विरूद्ध किये गये आन्दोलन से लेकर गॉधी इर्विन समझौते तक की घटनाओं का वर्णन है। क्षमाराव बड़ी विन्रमता से कहती हैं–

"गम्भीरों विषय क्वाऽयं श्रेष्ठः सत्याग्रहात्मकः ।
कृत्स्ने जगति विख्यातः क्व मे लघुतमा मतिः ।
शब्द गौरवहीनाऽहं युद्ध स्यैतस्य गौरवम् ।
व्याख्यातुमसमर्थऽस्मि गुणै दिव्येर्वुभषितम्।।[9]

इस ग्रन्थ में अंगेंजो का विरोध होने के कारण कोई भी भारतीय प्रकाषक इसे प्रकाषित करने को तैयार नही हुआ, अतः 1932 में इसका प्रकाषन पेरिस से हुआ।

सत्याग्रहगीता के आरम्भिक पाँच सर्गो में भारतीय जनता के साथ अंग्रेजो और जंमीदारों के द्वारा किये जा रहे अत्याचारों का खुलासा किया गया है

जनरल डायर की क्रूरता को जिस साहस से क्षमाराव ने उपस्थापित किया है वह केवल उन्हीं के द्वारा किया जा सकता था सेनापति बनने के बाद डायर ने लोगों के यातायात और सभा बन्द करा दिया था उसकी आज्ञा के बिना कोई भी बाहर नही जा सकता था किन्तु जब लाखों तीर्थ यात्री अमृतसर में एकत्र हो गये तब जनरल डायर ने जलियॉवाला बाग में लोगों के ऊपर गोलियो की वर्षा करा दी।

ततो दिनद्वयारदांग्लो डायरो नाम दुर्नरः ।
महासेनामधिष्ठाय सेनानी र्द्रुतभागमत् ।।
पौराण्डिडिमघोषेण सम्महूय दुरात्मकः ।
जनयात्राः सभाष्चापि निषेधामीत्य गर्जयत् ।।[10]

सम्पूर्ण महाकाव्य स्वातंत्र्य पूर्व के भारत का लेखाजोखा और इतिहास प्रस्तुत करता है। साइमन कमीषन इर्विन के सन्देष, इर्विन के लिये महात्मा गॉधी द्वारा भेजे गये उत्तर दाण्डी यात्रा , नमक ,सत्याग्रह उसका सम्पूर्ण देष में प्रभाव, अंग्रेजों द्वारा निर्दोष लोगों को फॉसी दिया जाना बम्बई में लाठी चार्ज इत्यादि ऐतिहासिक धटनाओं पण्डित क्षमाराव की लेखनी का संस्पर्ष पाकर जीवित सी हो उठी है। इर्विन के लिये गाँधी जी द्वारा भेजे गये पत्र का अविकल अनुवाद करने में भी पण्डिता क्षमाराव सफल हुयी हैं

निरंकुषाः प्रवर्तन्ते यस्मिन राज्येऽधिकारिणः ।
शासनं तदवरं नष्टं प्रजातिविवर्जितम् ।।
दुर्बला ननु गणयन्ते शान्तिमार्गावलाम्बिनः।।
परं सत्याग्रहाद विद्धि नास्ति तीव्रतरं बलम्। [11]

संस्कृत कवियों ने महारानी लक्ष्मीबाई , भगतसिंह , चन्द्रषेखर आजाद , सुभाषचन्द्र बोस महात्मा गाँधी जवाहर नेहरू, सरदार पटेल आदि जैसे महान स्वान्तन्य वीरो का चरित्र वर्णन करके देष वासियों में नयी ऊर्जा भरी और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिये उत्तेजित किया । वह भारत माता का करूणा कलित चित्र खींचता है और उसकी रक्षा का आहवाहन करता है। वह भगत सिंह के वचन को प्रस्तुत करता हुआ कहता है।

मृप्युरेव वधूर्मे स्यात हुतात्मानष्च यात्रिणः
आचार्यो धातुका भूयाद् विवाहः स्यान्ममेदृषः ।[12]

मृत्यु मेरी वधू है। मेरे साथ राष्ट्र के लिये आहुति देने वाले बाराती है तथा निहन्ता विवाह कराने वाला आचार्य है । मेरा विवाह कुछ ऐसा ही हो ।

यह संस्कृत कविता के नवावतार का भी काल था। संस्कृत कवि इस काल में नया भाववोध पाकर नवीन रचनाये करते है एवं संस्कृत कविता में नवीन सम्भावनाओं को तलाषते है नवीन छन्द नवीन विधायें गढते हैं।

रामनाथ प्रणयी ने अपने गीतो से युवाओं को मातृभूमि पर मर मिटने के लिये ललकारा मृत्यु के भय से भीतर घुसे रहने वालों को कड़ी फटकार लगायी और रण में कूद पड़ने के लिये जगाया ।

व्यर्थ मुञ्च न लोचननीरम ।
जगति भवत्येवं बहुहेला।
नैषा युवजनबिलपनबेला
सङ्ग्रामे सैनिक । विजय श्री रञ्चति नूनंत्वादषवीरम्
व्यर्थ मुञ्च न लोचननीरम ।

हे वीर! व्यर्थ में आँसू मत बहाओं संसार में ऐसे खिलवाड़ होते ही रहते है यह तुम जैसे तरूण वीरों के विलाप का समय नही हैं। संग्राम में विजयश्री तुम जैसे वीर का ही वरण करती है।

रामनाथ 'प्रणयी' के गीत संस्कृत साहित्य की थाती हैं। उनकी 'राष्ट्रवाणी' इन गीतों के कारण सचमुच राष्ट्रवाणी बन गयी है।

जानकीवल्लभ शास्त्री के गीत परम्परा के पारावार के रत्न बन गये हैं।

संस्कृत की अनेक रचनाओं को अंग्रेजो द्वारा प्रतिबन्धित कर दिया जाने के कारण संस्कृत विद्वानों ने ष्लेष का आश्रय लिया और अंग्रेजों के विरूद्ध लिखते रहे।। ऐसे कवियों में गंगाधार शास्त्री तथा नरोत्तम शास्त्री गागेय का नाम लिया जा सकता है।

गंगाधर शास्त्री का **अलिविलास संलाप** उनके युग की विसंगतियो का बहुषः वर्णन करता है। अंग्रेजों के भारत विरोधी व्यवहार तत्कालीन भारतीय राजाओं का अंग्रेजी हुकूमत के प्रति आत्मसमर्पण तथा भारतीय जनता के प्रति अंग्रेजो के दुर्व्यवहार का संकेत शास्त्री जी ने अपने इस काव्य में दिया है।

"अलिविलास संलाप" वेदान्तषास्त्र के सिद्धान्तो का प्रतिष्ठापक काव्य है काव्य नायक अलि व्यावहारिक रूप से एक सामान्य भ्रमर है किन्तु वह अलग–अलग प्रंसगों में अलग–अलग विषयों का प्रतिभास देता है।

वह अंग्रेजो के द्वारा भारतीय जनता पर किये जा रहे शोषण का प्रतिभास देता है –

अये विलासिन् । नहि विद्यते मे
रसालसालेऽभि निवेषलेषः ।
असक्तक्चेता जनकाननेनोद्य
त्सर्वागगमोत्थ रसमाद्रियेऽहम् ।। [13]

व्यावहारिक दषा में वह एक साधारण भ्रमर है तथा मकरन्द पान के लिये एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर उड़ता रहता है किन्तु प्रातिभासिक दषा में वह जनता का शोषण करने वाला क्रूर अंग्रेज है वह असक्तचेता है किसी के प्रति उसके मन में मोह दया या करूणा नही है।

स्वतंत्रता संग्राम में अवदान देने वाले संस्कृत मनीषियो में मथुरा प्रसाद दीक्षित का नाम अग्रगण्य है उन्होंने महाराणा प्रताप के जीवन पर 'वीर प्रताप' नामक नाटक की रचना की। इसके अतिरिक्त उन्होने भारत विजयनाटकम् , शंकरविजयनाटकम् , भक्तसुदर्षननाटकम् , गान्धीविजय नाटकम् , वीर पृथ्वी राज विजयम् आदि । इन नाटको का मंचन सोलन में दुर्गा महात्सव आदि के अवसर पर किया जाता था ।

भारत विजय की रचना कवि ने 1937 में की तथा उसमें उन्होंने भारत को स्वतंत्र दिखाया । इस नाटक में कुल सात अंक है , इसके अन्तिम दृष्य में गॉधी जी की सविनय अवज्ञा से पराजित अंग्रेज शासन को सत्ता गॉधी जी को सौंप कर भारत छोड़कर चले जाते है इस नाट्य के इस दृष्य को देखकर सोलन नरेष ने अंग्रेजों के भय से इसकी एक मात्र पाण्डुलिपि जब्त कर ली।

'भारत विजय' नाटक का प्रारम्भ प्रस्तावना के अनन्तर भारत माता के विलास से होता है –

मान्धाता भरतः पुरूर्यदुपती रन्तिः क्व भीमार्जुनौ,
भीष्मद्रोणभगीरथप्रभृतयो हा हा क्व कर्णः कृपः ।।
एते में तनयाः सुखं दिविषदः पष्यन्तु नां दुःखिनीं,
केषदीनदषा दयाविरहि तै र्दुष्टैः परिप्राप्यते।।[14]

भारत माता की इस दषा को देखकर योरोप देष से व्यापार के लिये आया कोई गोरा उसे झूठा आष्वासन देता है –

अहं त्वां सर्वदुःखेभ्यो मोचयिष्ये शुचंत्यज ।
समृद्धां सौख्य सम्पन्नां विधास्यामि स्वनीतितः ।[15]

उस गोरे का वचन सुनकर भारत माता उसे आषीर्वाद देती है किन्तु नेपाल सखी भारत माता का उस गोरे पर विष्वास करने से रोकती है ।

यदि स्वनीतिनैपुण्येन त्वामेव दुःखिनीं करिष्यति
तदा खुल त्वां को नाम दुःखेभ्यउन्मोचयिष्यति ।

किन्तु भारत माता –

"नहि नहि आकृतिरस्य गुणान कथयति सुसाधुरयम् तथा
नहि सर्वे विधार्मिकोऽसदाचारा भवन्ति।।[16]

इत्यादि कहती हुयी उस पर विष्वास कर लेती है

अंग्रेजो के शासन काल में भारतीय तन्तुवायो पर अनेक अत्याचार हुए। अंग्रेज मेहनत से बने बहूमल्य वस्त्रों को सस्ते में खरीदकर उन तन्तुवायों के अंगूठे काट लेते थें। वे दुःखी होकर कृषि कार्य करने लगते थे । सह सब देखकर भारत माता विलाप करती है –

हा हा किं मम पुत्रकेषु विहिंत हा प्रत्ययात् किं कृतं
हा देषस्य दषां किमस्य भविता हा सर्वनाषोऽभवत्।
हा दीनानपि वित्तलोलपतया निघ्नन्त्यमी मत्सुतान्
सर्वो हा प्रलयं गता मम सुताः वीरै र्विहीनाऽस्म्यहम् ।।[17]

सातवे अंक में चिन्तित अंग्रेज कहता है कि मै धर्म के आधार पर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच युद्ध कराकर मुसलमानों केा अपने पक्ष में करूँगा वो वैसा करता है । भारतीय आपसे में लडते है यह सब देखकर भारत माता दुःखी होती है और सुभाषचन्द्र बोस ,खुदीराम बोस राम प्रसाद बिस्मिल आदि क्रान्ति वीरों को याद करती है ।

वह अंग्रेजों को गर्जना करती हुई डाँटती है कुद्ध अंग्रेज उसे मारने को उद्यत होता है उसी समय सुभाषचन्द्र बोस मंच पर आकर उसे दूर करते है अंग्रेज आकर क्षमायाचना पूर्वक भारत का साम्राज्य गॉधी जी को सौंपता है। बालगंगाधर तिलक भी स्वर्ग से उतरते है गॉधी जी स्नेहपूर्वक कहते है –

जन्मसिद्धाधिकारों नस्त्वया संह्रियते कथम्
साधु मैत्रीं विधायैव स्वकीयं विषयं ब्रज।।[18]

स्वतंत्रता प्राप्ति से दस वर्ष पूर्व लिखे गये इस नाटक में स्वतंत्रता संग्राम के दो सौ वर्षो के इतिहास को समेटा गया है। स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत साहित्य के अवदान को लेकर यह केवल झलक मात्र है अनेक संस्कृतज्ञों ने स्वतंत्रता संग्राम में आत्माहूति दी तथा अपनी रचनाओं से इस संग्राम को गति प्रदान की।

परतन्त्रता की कष्टकारी बेड़ियों में जकड़े हुए भारतीय जनमानस को स्वतंत्र कराने के लिए संस्कृत कवियों ने दृष्य श्रव्य अनेकानेक काव्यों के माध्यम से भारतीय जनचेतना को नवीन गति प्रदान की । भारत माता को स्वतंत्र कराने हेतु एक नवजागरण का कार्य संस्कृत कृतियों ने किया। काव्य गीतों, नाटको के माध्यम से विपुल साहित्यराषि की रचना हुई । जिसका प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से भारतीय जनचेतना पर व्यापक प्रभाव रहा है और आज भी इस प्रकार का ऐतिहासिक किंवा काल्पनिक लेखन हो रहा है जिसमें तत्कालिन घटना क्रम का वर्णन किया जा रहा है । जिससे आज का स्वातन्त्रयोत्तर भारत भी उस समय के भगत सिंह, आजाद, लक्ष्मीबाई गाँधी वीरसावरकर आदि स्वातन्त्रय वीरों के योगदान से परिचित हों।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य बीसवी शताब्दी , राधावल्लभ त्रिपाठी , राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान , नई दिल्ली।
2. संस्कृत साहित्य बीसवी शताब्दी , राधावल्लभ त्रिपाठी , राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान , नई दिल्ली।
3. विषेषताब्दी संस्कृत काव्यामृतम् : अभिराज, राजेन्द्रमिश्र , दिल्ली संस्कृत अका 2000
4. संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास राम गोपाल मिश्र
5. भवानी भारती , महर्षि अरविन्द
6. वही
7. वही
8. वही
9. सत्याग्रह गीता , पण्डिता क्षमाराव
10. वही
11. वही

12. भारतविजयम् भूमिका ।
13. अलिविलाससंलाप , 1.25
14. भारतविजयम्
15. वही
16. वही
17. वही